मेवाड़ के जैन तीर्थ

The Jain Pilgrim Centres of Mewar

!! ॐ ह्रीँ श्रीँ श्री जीरावला पार्श्वनाथ रक्षां कुरू कुरू स्वाहा !!

संकलन, लेखन व प्रकाशन
मोहनलाल बोल्या

37, शांति निकेतन कॉलोनी, बेदला-बड़गाँव लिंक रोड, उदयपुर 313011
दूरभाष : 2450253, मो.- 9461384906
वेबसाईट : www.jainsmarika.com

प्रकाशक

मोहनलाल बोल्या

एवं

सहयोगी संस्था/सदस्य

सर्वाधिकार सुरक्षित
(लेखक के अधीन)

तृतीय संस्करण : सन् 2008

मूल्य : 415/-

मुद्रक : चौधरी ऑफसेट प्रा. लि.

11–12, गुरु रामदास कॉलोनी,
एम.बी. कॉलेज के सामने,
उदयपुर–313001, (राज.)

सौजन्य : श्री जिन शासन आराधना ट्रस्ट, मुम्बई

कर्मसाहित्य निष्णात सिद्धान्त महोदधि गच्छाधिपति
परम् पूज्य आचार्य श्रीमद् विजयप्रेमसूरीश्वरजी महाराज सा.

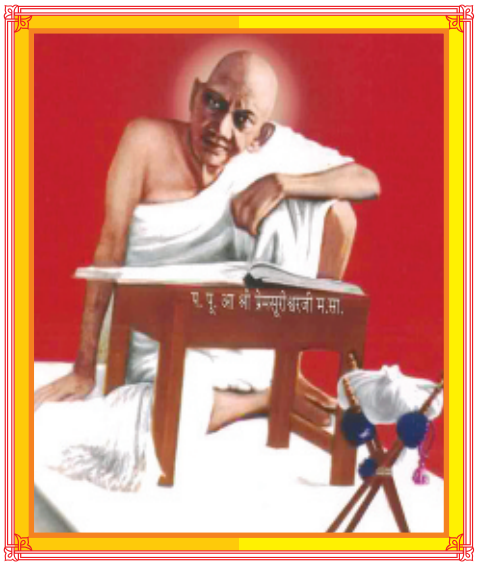

जीवन परिचय

बचपन का नाम	:	श्री प्रेमचन्द
माता का नाम	:	श्रीमती कंकूबाई
पिता का नाम	:	श्री भगवानदासजी
जन्मस्थल / तिथी	:	पिण्डवाड़ा वि.सं. 1940 फाल्गुन सुद 14 (नांदिया)
दीक्षा	:	वि.सं. 1957 मिगसर वदि 6 (पालीताणा)
दीक्षादाता	:	परम् पूज्य उपाध्याय प्रवर श्री वीरविजयजी महाराज सा.
गणिपद	:	वि.सं. 1976 मिगसर वदि 6 डमोई
सिद्धान्त महोदधि पद	:	वि.सं. 1977
पन्यास पद	:	वि.सं. 1981 मिगसरवदि 6 (अहमदाबाद)
उपाध्याय पद	:	वि.सं. 1987 मिगसरवदि 3 मुम्बई (अंधेरी)
आचार्य पद	:	वि.सं. 1991 चैत्रसुद 14 राधनपुर
देवलोक	:	वि.सं. 2024 ज्येष्ठ सुदि 11 खंभात

स्वभाव / विषय वस्तु सरल, नम्रता की मूर्ति, विनयशील, सहनशील, योगी महान त्यागी, स्वाध्याय प्रेमी, गुणवान कठोर, व दीर्घ कालीन तपस्वी, जीव रक्षा का ध्येय रखना व अनुमोदन आगम का अध्ययन व अध्यापन कराने में सक्षम गर्वरहित, निष्ठावान स्वास्थ्य साधना से कर्म साहित्य निष्णात बने, आत्म प्रशंसक नहीं होना, स्वहस्त आपने 88 दीक्षा प्रदान की।

विशेष – आप चारित्र धर्म स्वीकार करने हेतु व्याश से 55 किलोमीटर पैदल चलकर रेलमार्ग से पालीताणा पहुँचे और आचार्य श्रीमद विजयदानसूरीश्वर की निश्रा में मुनि प्रेमविजयजी बने। चारित्र जीवन में नित्य तपस्या, गुरूजनों की सेवा व स्वाध्याय से आत्मसात् किया। यद्यपि आप पंडितों के पास कम पढ़े किन्तु फिर भी स्वयंपाठी बनकर कठिन व सूक्ष्म अध्ययन किया जिस में शास्त्र व आगम सम्मिलित हैं। आपने संक्रमकरण, मार्गणाद्वार आदि शास्त्रों की रचना की एवं शिष्यों को पढाकर 15000 से 18000 श्लोक प्रमाण खवगसेढी, ठिइबंधों, पएसबंधों आदि महाशास्त्रों की रचना करवाई।

आपका जीवन संयमी, प्रशंसनीय रहा। आपने महावीर भगवान के सिद्वान्त, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह का पालन किया व मौनपूर्वक नीची दृष्टि से चलना आपकी विशेषता थी। आपने महाराष्ट्र राज्य के विधानसभा में प्रस्तुत बालदीक्षा प्रतिबंधक बिल के विरोध में आन्दोलन जगाया। फलतः बिल पास न हो सका। आपने कई संघयात्रा, उपधान, अंजनशलाका महोत्सव, प्रतिष्ठा, पौषधशाला, ज्ञान मंदिर बनवाए।

आज धर्मक्षेत्रों में धन और धनवानों का बोलबाला है। धर्म का इस कदर व्यावसायीकरण हो गया है कि धार्मिक क्रियाकलापों के ध्येय और परम अर्थ तो अब एक तरफ धरे रह जाते हैं और धर्म के नाम पर बाकायदा कितनी ही दुकानदारियाँ चलती हैं। धन का प्रभुत्व धर्म को भ्रष्ट कर रहा है। समाज का मध्य व निम्न वर्ग तो कहीं गिनती में ही नहीं हैं, जबकि उसी की श्रद्धा और आचरण-सम्पन्नता की बुनियाद पर धर्म विकास करता है। उच्च वर्ग से धर्म का उत्कर्ष तो अपवाद है। इसलिये धर्मक्षेत्रों में विचार व आचरण से शुद्ध गुणवानों की प्रधानता होनी चाहिए। वे धनवान भी हो सकते हैं।

कलात्मक सर्जक

न्याय विशारद संयम तप त्याग तपोमूर्ति

परम् पूज्य आचार्य देव श्रीमद् विजय भुवनभानु सूरीश्वरजी महाराज

(108 ओली के तपस्वी)

जीवन परिचय

जन्म नाम	:	श्री कांति भाई
जन्म	:	चैत्र वदि 6 वि.सं. 1967
जन्म स्थान	:	अहमदाबाद
माता का नाम	:	श्रीमती भूरी बहन
पिता का नाम	:	श्री चिमन भाई
शिक्षा	:	जी.डी.ए. (सी.ए. के समकक्ष)
दीक्षा	:	संवत् 1991 पोष सुदि 12 चाणस्मा (दि. 16.12.1934)
दीक्षादाता	:	सिद्धान्त महोदधि प.पू. आचार्य देव श्रीमद् विजय प्रेमसूरीश्वर जी महाराज सा.
गणिपद	:	संवत् 2012 फाल्गुन सुदि 2 पूना (दि. 22.02.56)
पन्यास पद	:	संवत् 2015 वैशाख सुदि 6 (दि. 2.05.1959 सुरेन्द्रनगर)

आचार्य पद	:	संवत् 2029 मिगसर सुदि 2 (दि. 07.12.1972, अहमदाबाद)
तपस्या व साधना	:	100 ओली की पूर्णाहूति, सं. 2026 आश्विनी सुदि 15 दि. 14.10.1970 कोलकत्ता)
	:	108 ओली की पूर्णाहूति, सं. 2035 फाल्गुणवदि 13 दि. 15.03.1979 (मुम्बई)
	:	काशी पंडितों के पास न्यास के अभ्यास हेतु समय को बचाने के लिए छः महिने तक छट्ठ के पारणे छट्ठ पर्वतिथियों पर उपवास, आयम्बिल व फल, मेवा, मिठाई जीवन पर्यन्त त्याग।
विशिष्ट कार्य	:	धार्मिक शिक्षण शिविरों के माध्मय से युवा पीढ़ी का उत्थान, विशिष्ट अध्यापन व पदार्थ संग्रहशैली का विकास, तत्वज्ञान व महापुरुष, महासतियों के जीवन चरित्र को जनमानस में, चित्र शैली के माध्यम से प्रचारित कर शिक्षा दी जानी। बालदीक्षा प्रतिबंधक विरोध, कत्लखाने बंद करवाये। दिव्य दर्शन साप्ताहिक के माध्यम से जिनवाणी का प्रसार।
विषय वस्तु	:	शास्त्र, स्वाध्याय, साधु–वाचना, रहस्यार्थ की प्राप्ति, चांदनी में लेखन कार्य, बीमारी में खड़े–खड़े क्रियाएं करना, संयम जीवन की प्रेरणा पूर्व, के महर्षियों का जीवन चरित्र के चित्र व कलिकाल सर्वज्ञ श्री हेमचन्द्रसूरीश्वर जी म. सा. व आचार्य देव श्री प्रेमसूरीश्वर जी म.सा. के जीवन चित्र, महावीर भगवान के 27 भवों के चित्रों का निर्माण (बामनवाड जी)
चारित्र पर्याय	:	58 वर्ष आचार्य पर्याय 20 वर्ष
पुस्तकों की संरचना	:	114 से अधिक
स्वहस्त से अंजनशलाका		12
स्वहस्त से प्रतिष्ठा	:	20
स्वहस्त से उपधान	:	20
शिष्य–प्रशिष्य आज्ञावृति		435
देवलोक	:	वि. संवत् 2049 चैत्रवदि 13 दि. 19.04.1993 अहमदाबाद
विशेषता	:	आप शासनसेवा के कई कार्यों के आद्यप्रणेता, अपनी भक्ति, विरक्ति व ज्ञानबुद्धि से समस्त जिनशासन की काया पलटने में सक्षम, निरन्तर कार्य में मग्न, वे कहते कि प्रसन्नता का राज यह है कि 24 घण्टों के लिए 28 घंटों के कार्य की योजना तैयार रखना और उसे नियमित समय से पूर्ण करने का भाव रखना। सादगी, उच्च विचार व उदारता के धणी।

परम् पूज्य वैराग्य देशना दक्ष आचार्य श्री हेमचन्द्रसूरीश्वर जी म.सा.

जीवन परिचय

जन्म नाम	:	श्री हीरालाल
जन्म	:	संवत् 1989 श्रावण वदि 14 (दि. 30.08.1932)
जन्म स्थान	:	खंभात
माता का नाम	:	श्रीमती मूलीबाई
पिता का नाम	:	श्री अम्बालाल रतनचन्द शाह
सगाई / विवाह	:	सगाई निश्चित हो गई, विवाह की तैयारी हो रही थी, उस समय जीवन का ऐसा मोड़ आया कि जीवनतारक गुरुदेव आ. प्रेमसूरीश्वर जी महाराज का संसर्ग हुआ। पू. भुवनभानु विजय जी महाराज हृदय बेधी प्रवचन श्रवणकर संसार की असारता का ज्ञान हुआ और विवाह न करने का विचार दृढ किया, स्वेच्छा से सगाई छोड़ दीक्षा ग्रहण की।
दीक्षा	:	वि.सं. 2008 ज्येष्ठ सूदि 5 भायरवला (मुम्बई)
दीक्षादाता	:	दादा गुरुदेव कर्म साहित्य निष्णांत परम् पूज्य प्रेमसूरीश्वर जी म. एवं न्याय विशारद प.पू. भुवनभानुविजयजी म. के शिष्य। प.पू. श्री पद्मविजयजी म.सा. के चरणों में जीवन समर्पित किया।

दीक्षित नाम : मुनिराज श्री हेमचन्द्रविजय जी म.सा.

स्वभाव : सरल, हसमुख, विचारवान, सहनशील, कम बोलना, सतत स्वाध्याय, तपस्वी, त्यागी, शांति की मूर्ति, गुरुभक्त व परमात्मा भक्ति में निमग्न

गणिपद : संवत् 2039 कार्तिक वदि 5 (खंभात)

सन्यास पद : संवत् 2041 मिगसर सुदि 11 (मलाड़ मुम्बई)

आचार्य पद : संवत् 2044 फाल्गुन वदि 3 (भाय खला, मुम्बई)

शिष्य/प्रशिष्य : आपके 43 शिष्य–प्रशिष्य का परिवार है।

अंजनशलाका, प्रतिष्ठाएं उपधान, संघ–वरघोड़ा मुम्बई में 108 दीक्षार्थी का वरघोड़ा निकला, पाली में 112 दीक्षार्थी का वरघोड़ा

विशेषता (योग्यता) स्वाध्याय की ज्वलन्त ज्योत, हर अवस्था में आपने सभी आगमों का गहन अध्ययन किया। इसमें कई उत्सर्ग, अपवाद के रहस्यों से पूर्ण छेद सूत्र के आप ज्ञाता बनें और संघ मान्य महापुरूष हुए। मध्य रात्रि में सीमन्धर स्वामी का सालंबन ध्यान, क्षपकश्रेणी का ध्यान, वीतरागता की संवेदना, परमसाम्यका अनुसंधान, तीन लोक के सभी तीर्थों की भाव यात्रा, स्वर्गस्थ गुरूदेवों, के साथ अनुसंधान, प्रभुभक्ति, प्रेममयी आँखे, करुणा के सागर, प्रत्येक क्षण अरिहंत का स्मरण, श्रुत रक्षा हेतु 300 से अधिक आगम व शास्त्रीय ग्रन्थों के संशोधन प्रकाशन, हस्तलिखित प्रतियों का निर्माण, पुनर्मुद्रण आदि प्रवृतियों में निरन्तर कार्यशैली कर्म सिद्धान्तों का चिंतन 350 ग्रन्थों की 400–400 प्रतियों का प्रकाशन कर ज्ञान भण्डारों को समृद्ध किया।

चारित्रवान परिवार : पूज्य श्री के साथ सगाई से सम्बद्ध सरस्वती और बहिन, विजया ने चारित्र धर्म अंगीकार किया। वर्तमान में ये साध्वी जी श्री स्वयंप्रभाश्री व प्रवर्तिनी बसन्तप्रभाश्री के रूप में साधना कर रही हैं व करवा रहे हैं।

इसी प्रकार आपकी भतीजी दिव्या ने चारित्र धर्म अंगीकार कर व विशाल परिवार में दिव्ययशाश्री जी बनकर संयम में लीन हैं।

मेवाड़ देशोद्धारक आ. जितेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा.

(400 तेलो के महान् तपस्वी)

जीवन परिचय

जन्म नाम	:	श्री जेठमल
जन्म	:	वि.सं. 1979 वै. वदि. 6 दि. 3–6–1915
जन्म स्थान	:	पादरली
माता का नाम	:	श्रीमती मनुबाई
पिता का नाम	:	श्री हीराचन्द जी साकरीया गौत्रीय
विवाह	:	वि.स.2001
पुत्र	:	श्री जिनदास
दीक्षा	:	वि.स. 2008 ज्येष्ठ सुदि 5 (पुत्र की आयु केवल 15 माह की) दीक्षा प्रदाता–दादागुरू देव कर्म साहित्य निष्णात् प.पू. आ.देवेश श्री विजय प्रेम सूरीश्वर जी म.सा.
दीक्षित नाम	:	मुनिराज श्री जितेन्द्र विजय जी दीक्षा गुरू–युवा शिविर आद्य प्रणेता आ. देवेश श्री भुवन भानु सूरीश्वरजी म.सा.

स्वभाव	:	सहनशील, प्रसन्नचित्त, हँसमुख, सरल
गणि पद	:	वि. सं. 2038, पन्यास पद वि. सं. 2041 पादरली ज्येष्ठ सुदि) दिनांक 27. 5. 85
आचार्य पद	:	वि.सं. 2044 चैत्रवदि 3 दलोठ (चित्तौड़) दिनाक 6–3–88
आपके शिष्य प्रशिष्य	:	108 व आपके आज्ञावर्ति साध्वी 201, आपके द्वारा सुसम्पन्न दीक्षा 80 साधु–साध्वी

नव निर्माण व जीर्णोद्धार कार्य–मेवाड़ मालवा के 410 जिन मंदिर व कांचीपुरम (तमिलनाडु) पांडिचेरी में भी जिन मंदिरों को सुव्यवस्थित सुसम्पन्न करवाये।

प्रतिष्ठाएँ	:	मेवाड़–मारवाड़–मालवा में 222 जैन मंदिर व तीर्थों की 400 मंदिरों का जीर्णोद्धार 21 ज्ञान भण्डार व 15 उपाश्रय की स्थापना कई उपधान अयंबिल ओली व पैदल संघ तथा मंदिर
राष्ट्र संत पदवी	:	17–12–2000 अजमेर
अंतिम चातुर्मास	:	वि.सं. 2061, भटार रोड जैन उपाश्रय, सूरत (गुजरात)
स्वर्गवास	:	आसोज सुद 2 वि.सं.2061, भटार रोड, सूरत, आपका गुरुमंदिर का निर्माण किया गया।
विशेष	:	मेवाड़ क्षेत्र में साधु भगवंतों का विचरण न होने से मंदिर जीर्ण हो रहे थे। गुरु आज्ञा को शिरोधार्य कर मेवाड़ में जीर्णोद्धार व प्रतिष्ठा की ज्योति जगाई। अधिकतर जैन श्वेष्ठि स्थानकवासी, तेरांपथी हो जाने से गर्म पानी की व्यवस्था वगैर, कठिनाई से इंतजाम होने पर एडजस्ट करना, पेड़ के नीचे आसन ग्रहण करते और मंदिर के प्रति जागरूकता लाने का संकल्प को पूर्ण करते हुए निरंतर आगे बढ़ते रहना और इन्हीं के परिश्रम से मेवाड़ के अस्सी प्रतिशत मंदिरों की कायाकल्प हुई।

प.पू. पन्यास प्रवर श्री कल्याणबोधि विजयजी गणिवर्य म.सा.

धर्म प्रेमी

मोहनलाल जी बोल्या

जोग धर्म लाभ

सभी महात्माएं सुखसाता में है... इस उम्र में भी इतिहास के विषय में आपकी अभिरूचि संशोधन रूचि एवं लेखन रूचि सराहनीय है...

मेवाड़ के अति प्राचीन एवं प्रभावक जैन मंदिर एवं प्रतिमाजी का सचित्र संकलन कार्य जैन संघ के लीये बेमिसाल एवं अनूठा है....

इस पुस्तक से... गांव–गांव में रहे मंदिरों की जानकारी मिलेगी.... परमात्मा के दर्शन–वंदन होंगे व मंदिर एवं प्रतिमा के भीतर छिपा प्रभाव एवं इतिहास का रहस्यमय ज्ञान प्राप्त होगा....

हमारे अंतर के आशिष है यह कृति जैन समाज में बहुमान्य बने. और जैन शासन की गरीमा को उजागर करने वाली और भी कृतियाँ आपके द्वारा सृजित होती रहे...

यही मनोकामना

आराधना में उजमाल रहे

पन्यास
कल्याणबोधि
विजय

पावापूरी– 22.10.07

प.पू. पन्यास प्रवर अपराजित विजयजी गणिवर्य म.सा.

धर्म प्रेमी–श्राद्धर्य श्रीमान् मोहन लालजी बोल्या

धर्मलाभ आशीर्वाद

आपने पूर्व में उदयपुर नगर के जैन श्वेताम्बर मंदिर एवं मेवाड़ के प्राचीन तीर्थ पर एक सुन्दर पुस्तक लिखी थी, जिसमें 60 मंदिरों का सम्पूर्ण लाभ आपके परिवार वालों ने ही लिया था, उसके बाद आपने मेवाड़ का प्राचीन तीर्थ देलवाड़ा जैन मंदिर जो आबू–देलवाड़ा से भी प्राचीन माना गया है। इसी के आधार पर आबू–देलवाड़ा मंदिरों के निर्माण हुए ऐसी किवदंती सुनने में आती है। ऐतिहासिक व वास्तुशिल्प की दृष्टि से देलवाड़ा मंदिरों का महत्वपूर्ण स्थान रहा है।

अनेक प्राचीन कलात्मक मंदिरों के इतिहास को प्रदर्शित कराने वाले दो पुस्तकों के प्रकाशन में आपका पुरुषार्थ और अनुभव ही मुख्यतया कारण बना है।

आपने अपने स्वास्थ्य की प्रतिकूलता होने पर एवं नैत्र की शक्ति क्षीण होने पर भी एक मात्र प्रभु का आदेश माना है। शासन और कर्मनिर्जरा का कार्य समाप्त कर अब तीसरी पुस्तक का प्रकाशन करने जा रहे हैं जिसमें उदयपुर व राजसमंद जिले के सभी जैन मंदिरों के इतिहास का समावेश किया है एवं साहित्य संकलन करने के लिए आपने अपना तन–मन और समय का भोग दे रहें जो अत्यंत अनुमोदनीय है।

मेवाड़ के प्रायः सभी तीर्थ तपागच्छ की महान् परम्परा की अनमोल देन है। तपागच्छ की उद्भव भूमि मेवाड़ आयड़ तीर्थ है।

तपागच्छ के प्रथम आचार्य श्री जगच्चन्द्रसूरि जो भगवान् महावीर के 44 वें पट्टधर थे, जिन्होंने दीक्षा दिन से आजीवन आयंबिल तप की कठोर तपस्या की थी। अहर नदी की तप्त रेत में आतापन लेते थे। उस समय राजा रावल जैत्रसिंह ने उसकी कठोर तपस्या से प्रभावित होकर वि.सं. 1285 की वैशाख शुक्ला 3 को आचार्य श्री को तपा पद्वी से अंलकृत किया और कालान्तर का बडगच्छ ही तपागच्छ कहलाया।

मेवाड़ के सभी गांवों और शहरों के मंदिर एवं मंदिरों से सम्बधित सभी आवश्यक जानकारी व इतिहास का संग्रह करने में अपना महत्वपूर्ण व बहुमूल्य समय दिया। इतिहास की जानकारी प्राप्त करने में आपने जो श्रम किया वह प्रशंसनीय है। आपने मंदिरों से सम्बन्धित जानकारी की यह तीसरी कृति समाज के लिये अत्यन्त उपयोगी बनेगी और सम्यगदर्शन को प्राप्त कराने, निर्मल बनाने में सहायक बनेगी। इस प्रकार से आपका पुरुषार्थ सार्थक और सफल बनेगा।

अनेक मंगल कामना के साथ।

द. अपराजित वि-म

(द.प. अपराजित विजय)

जब बुद्धिमान और अच्छे लोग
संगठित होकर राष्ट्र, धर्म व समाज के
कार्यों में आगे नहीं आते हैं; तब धूर्त्त, मूर्ख
और गलत लोग सभी पर हावी हो जाते हैं। इसकी
सज़ा समाज के हर वर्ग को भुगतनी पड़ती है।
व्यक्तिगत आकांक्षाओं के भूखे लोग अब महत्व पाने
और स्वार्थ साधने में लगे है। उन्हें राष्ट्र, धर्म या
समाज के हितों की तनिक भी चिन्ता नहीं है।
ऐसे में बुद्धिमान व अच्छे लोगों की निष्क्रियता
बहुत खतरनाक साबित होगी।

प. श्री निपुण रत्न विजय जी म.सा.
आचार्य देव श्री जितेन्द्र सूरीश्वर जी के शिष्य

श्री मोहनलाल जी बोल्या

सादर धर्म लाभ ।

मेवाड़ के अद्भुत तीर्थों में से नागदा, (शांति नाथ भगवान) केसरिया जी, दयाल शाह का किला (आदिनाथ भगवान) करेड़ा पार्श्वनाथ तीर्थों के साथ–साथ मेवाड़ के अन्य तीर्थों की सम्पूर्ण जानकारी एकत्रित करने में खूब परिश्रम किया। अभी आप **''मेवाड़ के जैन तीर्थ''** पुस्तक का प्रकाशन करवा रहे है, सुन्दर प्रयास है।

इससे साधु–साध्वियों को भी यात्रा प्रवास में मार्गदर्शन मिलेगा।

इसके पूर्व भी आपने **''उदयपुर नगर के जैन श्वेताम्बर मन्दिर एवं मेवाड़ के प्राचीन तीर्थ''** व **''मेवाड़ के प्राचीन तीर्थ देलवाड़ा जैन मंदिर''** का लेखन किया है।

सब के लिए सद्भाव व अनुमोदनीय है।

आपकी यह सभी जानकारी जन–जन तक पहुंचे और आपका परिश्रम सफल हो यही सद्भाव।

मेवाड़ देशोद्धारक आचार्य देव की चरण रज

(प. निपुणरत्न विजय)

श्री पार्श्व नाथ भगवान का मंदिर, मधुवन

संचालित : धर्म मंगल जैन विद्यापीठ, मधुवन, सम्मेदशिखर

बीस तीर्थंकर निर्वाण भूमि श्री सम्मेदशिखर जी पावनधरा पर तीर्थ स्थल की तलहटी मधुवन में **श्री धर्म मंगल जैन विद्यापीठ** की स्थापना के साथ–साथ पार्श्वनाथ भगवान व पद्मावली माता का मंदिर, जल कमल मंदिर की स्थापना के साथ ही इसी परिसर में पिछड़े क्षेत्र में **गरीबी व अज्ञान को दूर करने के लिए शिक्षा व संस्कार देने हेतु हाई स्कूल की स्थापना श्रीमद् विजय पद्मप्रभ सूरीश्वर जी म.सा.** के सदुपदेश से कराई। यहाँ पर छात्रों ने अध्ययन कर अपना व संस्था का नाम रोशन किया है। सम्मेद शिखर जी तीर्थ स्थल पर साधु संतों के आवास के लिए भी विशाल उपाश्रय व धर्मशाला निर्मित है। पद्मावती माता का मंदिर स्वर्ण रेखा से रेखांकित होने से शोभा बढ़ गई है।

आचार्य श्री के सदुपदेश से **उदयपुर (राजस्थान) में मान बाई मुरड़िया हॉस्पीटल व विश्राम गृह निर्मित हुआ है।** दोनों स्थलों पर पधारकर दर्शन व आवास का लाभ उठाइये।

यह संस्था 66 बीघा जमीन में फैली हुई है।

श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 51'' ऊंची व दोनों ओर आदिनाथ भगवान व श्री महावीर भगवान की श्वेत पाषाण की 41'' ऊँची प्रतिमाएं है। जल कमल मंदिर में स्थापित श्री पद्मावती देवी, अम्बिका देवी, सरस्वती देवी व महालक्ष्मी देवी का 51'' ऊँची प्रतिमाएं स्थापित है।

विद्यापीठ का चित्रण इस प्रकार है।

सम्मेदशिखर जी

सम्पर्क सूत्र – 06658–232230, 232306,

उदयपुर (0294) 248585, 6990141